Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

दुष्यंत कुमार के साहित्य में विरह भावना

Maya[1]* Dr. Meenu[2]

[1] Research Scholar, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Director, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार - *श्रृंगार रस के दो भेद स्वीकार किए गए हैं-संयोग श्रृंगार या वियोग श्रृंगार। संयोग श्रृंगार में नायक-नायिका के मिलन का चित्रण किया जाता है तथा वियोग श्रृंगार में नायक-नायिका के विरह का चित्रण किया जाता है। इस वियोग श्रृंगार को ही 'विरह' भी कहा जाता है। प्रायः देखा गया है कि प्रत्येक सफल कवि के पीछे प्रेम की विफलता ही काव्य शक्ति के रूप में कार्य करती हैं।*

----------X----------

प्रस्तावनाः

विरह की यह परम्परा बहुत ही प्राचीन है। ऋग्वेद दुनिया का सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ माना जाता है। ऋग्वेद के दसवें मण्डल के सूक्त 95 में पुरुरवा-उर्वशी (संवाद) मिलता है।

पुरुरवा उर्वशी को कहता है कि वह उसे छोड़कर न जाए।

अन्तरिक्षपां रजसो विमानीपुष,

शिक्षाम्युर्वशीं वशिष्ठः?

उप त्वा इतिः सुकृतस्य

तिष्ठान्नि वर्तस्व हृदयं तप्यते मे।[1]

अर्थात्-पुरुरवा उर्वशी को संबोधित करते हुए कहता है कि शुभ कर्म करने वाला तथा निवास देने वाला मैं वशिष्ठ तुमको वश में करता हूँ। मैं तुमको परामर्श देता हूँ कि तुम मेरे पास रहो। मेरा हृदय तुम्हारे बिना तप रहा है। इसलिए तुम वापिस घर में लौट आओ।

उक्त मंत्र से स्पष्ट है कि विरह की परम्परा वेदों में भी विद्यमान थी। इसके पश्चात् वाल्मीकि ने रामायण महाकाव्य में, भवभूति ने उत्तररामचरित् नाटक में, कालिदास ने मेघदूतं नामक खण्डकाव्य में इस परम्परा को शिखर पर पहुँचाया। आधुनिक हिन्दी साहित्य में हरिवंश राय बच्चन, महादेवी वर्मा (आधुनिक मीरा), अयोध्या सिंह हरिऔध ने विरह की भावना को अधिक भावपूर्ण शैली में उजागर किया है। इस कड़ी में दुष्यंत कुमार भी आते है, जिन्होंने विरह के कुछ भावों को अपनी कविता में उभारा है। दुष्यंत कुमार अपने कालेज के दिनों मे एक युवती से प्रेम करते थे तथा उससे विवाह करना चाहते थे। परन्तु दुष्यंत कुमार के पिता को यह विवाह मंजुर नहीं था। दुष्यंत कुमार को अपने पिता की जिद्द के आगे झुकना पड़ा।

यहीं से उनके हृदय में विरह की पीर का भाव समा गया। इसके पश्चात् उनके प्रारम्भिक लेखन में विरह की भावना ही अधिक मात्रा में दिखाई देती है।

'भूला सकूँगा नहीं कभी' नामक कविता में कवि कहता है कि वह अपनी प्रिया को जीवन-भर याद करता रहेगा। उसके लिए प्रेम का भाव जीवन शक्ति के रूप में कार्य करता है। वह कहता है कि-

तुमने विरह आवरण कोमलतम तन को पहनाकर,

तुमने खूब जलाया मुझको अपना शलभ बनाकर,

तुमने दुःख दे दिया सुखों में मेरे आग लगाकर,

तुमने चैन न पाया बिलकुल जी भर मुझे सताकर,

पर जब इससे अधिक हुआ दुःख मुझको पीड़ा पाकर,

तुमने सुख दे दिया मुझे, पीड़ा में भाव जगाकर।[2]

दुष्यंत कुमार की विरह भावना में लोभ, प्रेम तथा श्रद्धा का एक सूत्र अविच्छिन्न रूप से विद्यमान है। वह अपनी पीड़ा की अवस्था में भी मग्न हैं तथा इस अवस्था के लिए अपनी प्रेयसी

www.ignited.in

को धन्यवाद ज्ञापित करता है कि तुमने पीड़ा का भाव जगाकर मेरे जीवन को सुखों से परिपूर्ण कर दिया।

'कौन तुम मेरे स्वरों में' नामक कविता में कवि का विरह भाव कुछ अधिक मुखर हुआ है। कवि को लगता है कि जब वह गीत गाता है, तो उसे लगता है कि कोई उसके स्वरों के साथ स्वर मिलकार गा रहा है।

कौन तुम मेरे स्वरों में

स्वर मिलाकर गा रहे हो।

विरह का परिधान पहने,

कामना करता तुम्हारी।

आँसूओं के पुष्प से प्रिये,

अर्चना करता तुम्हारी।

कौन तुम प्रिय अर्चना के

फूल देते जा रहे हो।

चल रहा हूँ आज भी मैं

वेदनाओं की डकर पर,

खा रहा हूँ ठोंकरें पर,

बढ़ रहा विश्वास लेकर।[3]

'आ रही मुझको तुम्हारी याद' नामक कविता में कवि चाँद की चाँदनी से परेशान है। वह चाँदनी रात में अपनी प्रेमिका की याद में जल रहा है। प्रेम मानव का सबसे पवित्र भाव है। यह प्रेम जब दाम्पत्य जीवन का हो तो वह प्रेम का पावन रूप माना जाता है। दुष्यंत कुमार का विरह अपनी प्रिया या पत्नी के लिए इस रूप में अभिव्यक्त हुआ है-

आ रही मुझको तुम्हारी याद ऐसी चाँदनी में

ये गगन के दीप जल-जल,

रोशनी फैला रहे है।

जल मरो तुम भी किसी,

याद में सिखला रहे हैं।

जल रहा हूँ, आज मैं भी इस मुसीबत चाँदनी में।

पास आकर भी युगों से,

मिल न पाए चाँद-तारे।

पास रहकर भी परस्पर,

मिल न पाए है किनारे।

जल रहा हूँ प्रिये विरह की इसलिए ही रागिनी में।[4]

'मेरी वो आँखे पथराई' नामक कविता में विरह का भाव अधिक आतुरता से युक्त है। अपनी प्रिया का इन्तजार करते-करते उसकी आँखे पथरा चुकी हैं, लेकिन उसकी प्रिया ने उसे अभी तक दर्शन नहीं दिए हैं-

मेरी वो आँखे पथराई,

दृग के दीप जलाकर मग में

आकुलता लेकर रग-रग में।

खड़ा हुआ हूँ कई युगों से

प्रिये न कहीं पर दिए दिखाई।

गा न सका मैं गीत मिलन के,

बुझ न सके पर दीप लगन के

तारे गिनते बीत गई ही,

मेरे जीवन की तरुणाई।[5]

'मत पूछो कैसे रात कटी मेरी' नामक कविता में कवि अपनी वियोग-रात्रि का वर्णन करता है। यह सार्वभौमिक सत्य है कि विरही प्रेमी दिन तो जैसे-तैसे कट जाता है, परन्तु रात का पहर उसके लिए अधिक पीड़ादायक होता है। कवि कहता है कि-

मत पूछो कैसे रात कटी हैं मेरी?

कैसे पीड़ा के साथ खेलता आया?

कैसे दुःख के आघात झेलता आया?

कैस सुन पाया जग वालों के ताने?

www.ignited.in

कैसे जीवन की रेल ढेलता आया।

कैसे नभ के नक्षत्र सभी गिन डाले,

कैसे तारों के साथ पटी है मेरी।

कैसे मैंने तुम तक संदेश पहुँचाएँ,

कैसे मैंने ये मीठे गीत बनाए।

कैसे गा पाया रुद्ध कण्ठ से इनको,

कैसे मैंने गीतों के दीप सजए।

कैसे पीड़ा के गीत बनाए मैंने

कैसे गीतों में पी बँही है मेरी।[6]

'गीतों के छाया में मेरे' नामक कविता में कवि कहता है कि मेरे श्वास-श्वास पर तुम्हारा नाम लिखा है। कवि को अपनी प्रिया के आने का इंतजार है। वह कहता है-

गीतों की छाया में मेरे,

जीवन का यौवन पलता है।

नित्य किसी के आने के पल

मेरे श्वास गिना करते है,

आशा आश्वासों पर जीवित,

सपने मृत्यु बिना मरते हैं।

आँख-मिचैली में आशा की

अंतर को अंतर छलता है।[7]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है। कि कवि दुष्यंत कुमार के पे्रम ने एक सीमा पर पहुँचकर एक सूक्ष्म तथा गंभीर रूप धारण कर लिया है। वह प्रेम की अग्नि (विरह की आग) में तपकर कुन्दन बन चुका है। इस स्थिति में वह सर्वत्र अपनी प्रेमिका का दीदार करता है।

वह सन्तुष्ट तथा असंतुष्टि के भाव से ऊपर उठ चुका है, परन्तु उसके हृदय में प्रतीक्षा की लौ निरन्तर जल रही है, जो निरन्तर जलकर वह आभास करा रही है कि तुमने भी कभी किसी से प्रेम किया था, परन्तु वह प्यार परवान नहीं चढ़ पाया।

कवि दुष्यंत कुमार कामना की संकुचित तथा संकीर्ण दीवारों में कैद न होकर उन्मुक्त तथा स्वच्छंद प्रेम का उपासक बनना चाहता है। वह नित्य यही प्रार्थना करता है कि चाहे तुम न मिल सकी, परन्तु तुम जहाँ भी रहो। प्रेम की यह उदात्त भावना ही दुष्यंत कुमार की विरह-भावना को विशिष्ट बनाती है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची:-

1. ऋग्वेद- मण्डल-10, सूक्त-05
2. दुष्यंत कुमार रचनावली - भाग-1, (संपादक-विजय बहादुर सिंह) किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰-137
3. वही- पृ॰-137-138
4. वही- पृ॰-149
5. वही- पृ॰-151
6. वही- पृ॰-153
7. वही- पृ॰-171

Corresponding Author

Maya*

Research Scholar, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

www.ignited.in